Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2026: 8.739,
https://www.srjis.com/issues_data/295
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL, JUNE-JULY 2026, VOL-14/76

ममता कालिया के कथा साहित्य में मानवीय संघर्ष

शुभांगी श्रीधर भागवत
शोधार्थी, श्री मुक्तानंद महाविद्यालय गंगापुर
डॉ. मीना साहेबराव खरात
शोध निर्देशक एवं हिंदी विभाग प्रमुख, श्री मुक्तानंद महाविद्यालय गंगापुर

Paper Received On: 21 JUNE 2026
Peer Reviewed On: 25 JULY 2026
Published On: 01 AUG 2026

Abstract

ममता कालिया की कथा साहित्य में मानवीय संघर्ष को यथार्थवादी दृष्टिकोण से देखा गया है। समकालीन भारतीय समाज के बदलते हुए स्वरूप मध्यवर्ती जीवन की जटिलताओं और व्यक्ति के विविध प्रकार के संघर्षों का चित्रण मिलता है ।व्यक्तिगत समस्या के रूप में नहीं बल्कि सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक तथा महिला और पुरुष संबंधों से जुड़े व्यापक जीवन संघर्ष के रूप में अभिव्यक्त हुआ है। उनके पात्र जीवन के परिस्थितियों सामाजिक अपेक्षा और बदलते मूल्य के बीच अपने अस्तित्व एवं आत्मसम्मान के लिए संघर्ष करते दिखाई देते हैं। सामाजिक एवं पारिवारिक संघर्ष, स्त्री पुरुष संघर्ष मानवीय संबंधों में संघर्ष राजनीतिक आर्थिक संघर्ष देखा जा सकता है। ममताजी ने साठोत्तरी साहित्य से लेकर इक्कीसवीं सदी तक अपनी लंबी रचना यात्रा में आधुनिक जीवन की विसंगतियां आर्थिक दबाव में पिस्ता हुआ व्यक्ति व्यक्तिगत आकांक्षाएं मनुष्य की विविध प्रकार की व्यथा महिलाओं का संघर्ष उन्होंने यथार्थवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। उनका कथा साहित्य मानवीय जीवन के संघर्ष का एक जीवंत दस्तावेज है। ममता जी की कथा साहित्य का गहराई से अध्ययन करने के बाद यह पता चलता है कि उन्होंने मानवीय संघर्ष के सभी सूक्ष्म पहलुओं को सामाजिक-आर्थिक मनोवैज्ञानिक और पारिवारिक राजनीतिक संघर्ष कोअपने लेखन कार्य से समृद्ध किया है।

भूमिका

ममता कालिया के कथा साहित्य में मानवीय संघर्ष में कई प्रकार से मानवीय संघर्ष होते हुए हमें दिखाई देता है।संघर्ष जैसे महिला संघर्ष, पारिवारिक संघर्ष, सामाजिक संघर्ष,आर्थिक संघर्ष, राजनीतिक संघर्ष यह सब बातें हमारे सामने आती है।ऐसे लोग होते हैं जो बहुत अमीर नहीं होते और बेहद गरीब भी नहीं होते असली संघर्ष अपने हैसियत को बचाए रखने का होता है भूखे रहकर भी अच्छे कपड़े पहनकर दिखाना ताकि उन्हें कोई बेचारा ना समझे सीमित आय के बावजूद सामाजिक आयोजन और त्योहार पर खर्च करने का दबाव उन पर रहता है। मुंबई या दिल्ली जैसे शहरों में एक छोटा सा घर फ्लैट पाने के लिए घर चलाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। किराए के मकान में जब रहना पड़ता है तो किस प्रकार से मालिक की शर्तें व्यक्ति के स्वाभिमान को आत्म सम्मान को चोट पहुंचती है। ममता जी के तीन लघु उपन्यास लडकीयां इस उपन्यास में किस प्रकार व्यक्ती आपनी रोजी रोटी कमाने के लिए दुसरे

Copyright@2026 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

शहर में आकर मकान किराये पर लेता है और जो मकानवाला आदमी और मकानो की देखभाल करने वाला आदमी सारे मेंशन के नौकरों को धमकता है "सालों सफाई रखो फ्लैट की नहीं तो सब रात-रात गिरवा देंगे आपका बिल्डिंग" (1) और शहरों में पानी की समस्या भी दिन-ब-दिन बढ़ रही है महिलाओं का मासिक बजट हिल जाता है लड़कियां इस उपन्यास में पानी की भी पैसे देकर मंगवाना पड़ता है"औरतें हिसाब लगा दिए छह रुपए रोज का पानी मंगाया तो दौसौ महीने का ही हो गया बंटाधार। तभी ना मकान किराया सस्ता है। किसी को क्या पता पानी कब तक पैसे लगते हैं मुंबई में"। (2)दैनिक खर्चों का हिसाब लगाते लगाते जब महीने के आखिरी दिनों में जेब खाली हो जाती है तो उधारी के बोझ तले दब जाता है। कामकाजी महिला जब कमाने लगती है तो उसकी आय पर परिवार का अधिकार रहता है । उसे वह पैसे खर्च करने के स्वतंत्रता नहीं होती उसे घर में भी आर्थिक शोषण होता है। और दोनों जगह शारीरिक श्रम करने के बाद भी आर्थिक निर्णय में कोई स्थान नहीं होता। सपनों की होम डिलीवरी इस उपन्यास में रुचि आर्थिक रूप से सबल है।

"बस जब पिता पुत्र को आर्थिक कष्ट होता है तब उसके आगे चले आते हैं"।(3)

रुचि को बड़ा दुख होता है कि उसका पति और बेटा सिर्फ उसे आर्थिक संघर्ष में ही याद करते हैं । उसे पैसे आते ही उसे भूल जाते हैं बड़ी दुख की बात है कि रुचि से कोई प्यार और लगाव नहीं है वह सिर्फ आर्थिक संघर्ष में पैसे देने वाले महिला समझते हैं। यह दयनीय और निंदनीय काम है इतना पैसा मांगते हैं फिर भी उन्हें कम पड़ते हैं। उसका पति प्रभाकर अपने बेटे से कहता है कि रोज "तेरा यूनिवर्सिटी जाना मेरे जी का जंजाल है। रोज तुझे सौ का नोट चाहिए अपनी मां से मोटरसाइकिल मांग"(4) पति और बेटा सिर्फ पैसों के लिए उनसे फोन करते हैं। महिला को पैसे कमाने वाली मशीन समझ जाता है। उसमें कोई अपनापन नहीं प्यार नहीं होता इस तरह से महीना आर्थिक शोषण और मानसिक त्रासदी की शिकार होती है। शासन में विभिन्न दलों और सरकार के शासन में विभिन्न दल और सरकार की नीतियों और शासन के तरीकों पर मतभेद होते हैं। संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा होते हैं उसमें विभिन्न समूह राजनीतिक दलों डावपेज खेल सकते हैं। सामाजिक स्तर आर्थिक स्तर और वैचारिक हितों में टकराव से राजनीतिक संघर्ष हो जाते हैं। वर्तमान समाज में विविध प्रकार से राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियां होती है घूसखोरी, कालाबाजारी भ्रष्ट नेता अफसर अबलाओ पर अत्याचार होते हैं। ममता जी के सपनों की होम डिलीवरी में रुचि का दूसरा पति सर्वेश एक पत्रकार है और वह रुचि से बात कर करते वक्त कहता है कि "असली खेल तो मंदिर के पट बंद होने के बाद शुरू होता है जब वहां के पंडित, पुजारी मजबूर औरतों को कभी पाखंड से, कभी-कभी पराक्रम से अपनी हवस का शिकार बनाते हैं"(5) मंदिरों मतों में गंदी राजनीति का और समाज को धोखा दे देने वाला खेल खेला जाता है दिखाने के दांत अलग होते है और खाने के दांत अलग होते हैं। पूजा भक्ति ध्यान से मठों को सजाया जाता है और अंदर कुछ और राजनीति चलती है। गंदे तरीके से सब मिलजुल कर मजबूर, दुखी विधवा, समाज से सताई हुई औरतों को हवस का शिकार बनाते हैं। ममता जी ने सर्वेश के विचारों को माध्यम से यहां प्रस्तुत किया है कि समाज में नैतिक भ्रष्टाचार हो रहा है और इसमें पीसती महिलाओं को संघर्ष यह दिखाई देता है और पाखंडी लोग यहां गंदा खेल खेल रहे हैं। हमें समाचार चैनलों से अखबारों से इस गंदी राजनीति का पता चलता है।

महिलाओं का संघर्ष तो जहां वह काम करती है वहां पर भी होता है। जांच अभी जारी है ममता जी की इस कहानी में अपर्णा काम कर रही थी और ऑफिस में मर्दों ने अपनी फितरत दिखा डाली अपर्णा को लगभग ऑफिस में ढाई महीना ही हुआ था "आज शाम को क्या कर रही हो? यह सवाल धीरे-धीरे बैंक का हर छोटा बड़ा अधिकारी अपर्णा से पूछ चुका था।"(6) महिला संघर्षरत होकर घर में और घर के

बाहर कार्य स्थल पर जीवन यापन करती है। उसके लिए परिवार में भी कुछ काम संघर्ष नहीं होता। पारिवारिक संघर्ष के बिना हर व्यक्ति का जीवन अधूरा है। पारिवारिक संघर्ष देखा जाए तो सामान्य घटना होती है लेकिन जब लगता था और ऐसा होता है तो परिवार को इससे कोई नहीं बचा सकता परिवार के सदस्य की मानसिक, शारीरिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है यहां पैसे से जुड़ी समस्या हो सकती है। गलतफहमी, अनुशासन, स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं,एक दूसरे को उपेक्षित महसूस करना जैसे कारणों से परिवार में तनाव और संघर्ष पैदा होता है। ममता कालिया जी के एक पत्नी के नोट्स इस उपन्यास में कविता के मां की मृत्यु हो जाती है तो उसके घर का माहौल एकदम से बदल जाता है। अब कविता के मन में "एक तरफ से पिता के लिए भयावह और एकाकी जीवन के अनिश्चितता और दूसरी और भाभी की हृदय हीनता से उसका मन आशंकित हो उठता है"।(7)ममता कालिया एक साहित्यकार है। लेखिका के दृष्टि से कुछ छिपता नहीं उन्होंने खुद परिवार का संघर्ष देखा है उन्होंने कई पारिवारिक समस्याओं से जूझते हुए संघर्ष किया है वह अपने एक उपन्यास के पूर्व कथन में लिखती है "पिछले तीस वर्षों में आजाद हिंदुस्तान की युवा वर्ग की जीवन स्थितियां ज्यादा नहीं बदली है हर एक के सामने है कि जीवित रह सकने का संघर्ष कार्य जगत की यांत्रिक स्पर्धा तालमेल के तनाव और सपनों के टूटते तारे इन सबके बीच अपनी परस्पता बनाए रखना प्रेमियों के लिए वास्तव में चुनौती की तरह आता है'।(8) घर में परिवार में आर्थिक दबाव पारिवारिक तनाव उत्पन्न करता रहता है। एक तरह से परिवार से अलग रहकर भी संघर्ष करना पड़ता है वह अकेलेपन का संघर्ष शहर इंसान को अकेलेपन के दौर से गुजरना पड़ता है । अभी घर इस उपन्यास में अकेला शहर में आकर रहता है नौकरी करता है। और अकेलापन महसूस करता है परमजीत जब वह संजीवनी से मिला तो संजीवनी की भी अपने पारिवारिक समस्याएं है संजीवनी नौकरी करती है फिर भी भाभी का बर्ताव अलग है वह कहती है "नौकरी करती हो इसी से तो भाभी कुछ नहीं बोल सकती जब से भाई ने बिजनेस में हाथ लगाया है भाभी का दिमाग आसमान पर चढ़ गया है सोचती है घर उनका है"(9) व बेटियों की हैसियत भाभी के आने के बाद बदल जाती है यदि पति कुछ कामकाजी हो तो बहुएं रोप जमाने लगती है। इससे परिवार के सभी सदस्यों को संघर्ष करना पड़ता है। ममता जी के सुखम दुखम इस उपन्यास का पात्र कवि जब शहर से घर आता है तो उसे बच्चों के हालात ठीक नहीं लगती पत्नी दुबली पतली दिखाई देती है। मुन्नी के शरीर पर तो मांस का के नाम पर कुछ भी नहीं है। पत्नी इंदू से सारे हकीकत पता चलती है तो वह उठकर नीचे जाकर अपनी मां से और बहन से कुछ सवाल करना चाहता है तो हिंदू उसे रोकतीं हैं और कहती है

" महाभारत ही मचाओगे ना सांस ननंद बरै के छतै-सी पीछे पड़ जाएंगे और तुम चार दिन बाद चल दोगे"।(10)

जिस परिवार में बेटा काम ना करता हो कमाता ना हो उसकी बीवी बच्चों को यदि घर वाले पालते हैं तो उसकी पत्नी को बहुत सारा दुःख बर्दाश्त करना पड़ता है ।उसके बच्चों को खाना दूध अच्छे से नहीं मिलता ना ही कपड़े अच्छे से मिलते हैं। दवाइयां का खर्चा और खुद भी खाने के लिए कुछ नहीं मिलता । लेकिन बेटे को अच्छे से रखा जाता है इसलिए इंदु कहते हैं तुम चार दिन बाद चले जाओगे तो अच्छे से रहोगे तुम कुछ कहोगे तो महाभारत छिड जाएगी बाद में सांस ननंद मिलकर बच्चों को और उसे चैन से नहीं रहने देंगे इस प्रकार संघर्ष घर में बहू को सहना पड़ता है। और सामाजिक संघर्ष में भी दो से अधिक व्यक्ति परस्पर विरोधी लक्ष को प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हैं।

सामाजिक संघर्ष में अपने हितों पर जोर दिया जाता है और हितों की खोज की संघर्ष को जन्म देती है। समाज में अपने हितों के लिए संघर्ष किया जाता है सामाजिक असमानता, जातिवाद, आर्थिक असमानता के कारण राजनीतिक कारणों से सामाजिक संघर्ष होता है। रोजमर्रा की परिस्थितियों होती है पारिवारिक

मतभेद, कार्यस्थल पर संघर्ष, दोस्तों के बीच विवाद, परस्परिक सामाजिक संघर्ष में आते हैं। पारस्परिक संबंध और सामाजिक संघर्ष की जड़े अवसर व्यक्तिगत व्यक्तित्व और अंतरक्रियो की जडौ में निहित होते है।

गलत संचार, गलतफहमियां या अलग-अलग अपेक्षा जैसी मामूली लगने वाली मुद्दों पर गंभीर संघर्ष हो सकता है। समाज में ऐसे छात्र होते हैं "जो सिर्फ नेतागिरी के बल पर मशहूर होना चाहते हैं सक्रिय हो गए, उन्होंने छात्र यूनियन के चुनाव रखवा दिए"(11) ममता कालिया के साहित्य में मध्यवर्गीय व्यक्ती का संघर्ष महत्वपूर्ण है।सीमित आय, बढ़ती महंगाई, आवास की समस्या, सामाजिक प्रतिष्ठा बनाने उपभोक्तावादी जीवन शैली, आर्थिक व मानसिक तनाव उत्पन्न करते है। उनका कथा साहित्य शहरी जीवन महिला और पुरुष की समस्या सूक्ष्मचित्रण मिलता है। इस दृष्टी से मध्यवर्गीय जीवन में संघर्ष का दस्तावेज दिखाई देता है।

निष्कर्ष

संघर्ष मानवीय जीवन का अनिवार्य हिस्सा है। संघर्ष केवल आर्थिक अभाव तक सीमित नहीं है बल्कि सामाजिक पारिवारिक स्त्री पुरुष संबंधों राजनीतिक परिस्थितियों मानसिक तनाव और आत्मसम्मान से भी संबंध होता है।ममता कालिया की कथा साहित्य में मानवीय संघर्ष आधुनिक भारतीय समाज के बदलते हुए जीवन मूल्य सामाजिक परिस्थितियों तथा व्यक्ति की आंतरिक संविधानों से गहराई से जुड़ा हुआ है।उनका कथा साहित्य अध्ययन से स्पष्ट होता है कि संघर्ष मनुष्य जीवन निरंतर संघर्ष पूर्ण होता है। लड़कियां इस उपन्यास में महानगरीय जीवन की समस्या और व्यक्ति को उन समस्याओं से किस प्रकार लड़ना पड़ता है यह प्रभावशाली ढंग से ममता जी ने अभिव्यक्त किया है ।उनके कथा साहित्य में महिला अत्यंत महत्वपूर्ण और एक घर और कार्यस्थल दोनों जगह संघर्ष करती है आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने का प्रयास करती है। आत्मनिर्भर होने के बाद भी उसे अपने अर्जित धन पर स्वतंत्र अधिकार नहीं मिलता है परिवार द्वारा उसकी केवल आर्थिक आवश्यकता पूर्ण करने का साधन माना जाता है। और उसी के लिए उसे इस्तेमाल किया जाता है उसके मानसिक भावनात्मक शोषण को देखा जा सकता है। सपनों की होम डिलीवरी के माध्यम से एक आर्थिक रूप से सबल महिला उसे भी सम्मान प्रेम के अभाव से पीड़ित होती है।

जांच अभी जा रही है मैं अपर्णा के माध्यम से कार्य स्थल पर पुरुषवादी मानसिकता का सामना करना पड़ता है और पुरुष प्रधान सोच से बचाना पड़ता है। ममता कालिया का कथा साहित्य में पारिवारिक संघर्ष भी अधिक से अधिक व्यापक रूप से सामने आता है आर्थिक असमानता, सांस बहू, ननंद भाभी, पति पत्नी तनाव अनेक प्रश्नों को हमें दिखाई देता है। पति एक पत्नी के नोट्स तथा सुखम् दुखम जैसे रचनाओं से हमें पारिवारिक संबंधों के भीतर छिपे तनाव और मानसिक पीड़ा को प्रभावशाली माध्यम से ममता जी ने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है और उसमें वह सफल हो गई है। सामाजिक संघर्ष के संदर्भ में आजकल असमानता, स्वार्थ, राजनीतिक प्रभाव, व्यक्ति के बीच में उत्पन्न तनाव व उनके पात्र अपने अस्तित्व और हितों की रक्षा के लिए सामाजिक स परिस्थितियों से संघर्ष करते हैं छात्र राजनीतिक सामाजिक प्रतिष्ठा व्यक्तिगत स्वार्थके प्रसंग के माध्यम से समकालीन समाज में बढ़ती प्रतिस्पर्धा और संघर्ष का चित्रण मिलता है। अपने कथा साहित्य में ममता कालिया जी राजनीतिक संघर्ष भ्रष्टाचार का चित्रण भी दिखाया है। सपनों की होम डिलीवरी के सर्वेश के माध्यम से धार्मिक संस्थाओं के पीछे छूटे शोषण पाखंड तथा सत्ता स्वार्थ को उजागर किया है। इस स्पष्ट होता है कि लेखिका का सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था की मौजूद विसंगति को केवल बाहरी रूप में नहीं दिखती बल्कि उनके मानवीय प्रभाव को सामने लाती है। इसी प्रकार मानवीय संघर्ष के बीच आर्थिक संघर्ष का भी गहरा संबंध दिखाई

देता है आर्थिक दबाव व्यक्ति पारिवारिक सामाजिक मुद्दों को प्रभावित करता है। कई बार आर्थिक आवश्यकता कारण व्यक्ति अपने आत्मसम्मान भावनाओं और इच्छाओं से समझौता करना करता है। इस प्रकार ममता कालिया जी संघर्षशील मनुष्य के जीवन को यथार्थवादी एवं संवेदनशील रूप में दिखाया है। स्त्री पुरुष परिवार समाज आर्थिक व्यवस्था सभी को मानवीय दृष्टि से देखा है। उनके पात्र परिस्थितियों से टूटते नहीं बल्कि संघर्ष करते हैं अस्तित्व आत्म सम्मान बेहतर जीवन के लिए वह प्रयास करते हैं उसकी तलाश करते हैं। उनके साहित्य में मानवीय संघर्ष केवल समस्या या पीड़ा का चित्रण नहीं बल्कि आत्म सम्मान स्वतंत्रता जिजीवीषा विशाल जीवन की मानवीय गरिमा की खोज भी है। ममता कार्य के साहित्य में मानवीय संघर्ष का अध्ययन यह सिद्ध करता है कि उनकी रचनाएं समकालीन समाज की वास्तविकताओं को सामने लाने के लिए अपने आप में भीतर संघर्ष करने की शक्ति और जीने जीवन के प्रति जिजीविषा को रेखांकित करती है। यही विशेषता उनकी कथा साहित्य के आज के सामाजिक संदर्भ में भी प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है।

संदर्भ

१) तीन लघु उपन्यास ममता कालिया पृष्ठ क्रमांक 72
२) वही पृष्ठ क्रमांक 76
३) सपनों की होम डिलीवरी उपन्यास ममता कालिया पृष्ठ क्रमांक 30
४) वही पृष्ठ क्रमांक 68
५) वही पृष्ठ क्रमांक 56
६) जांच अभी जारी है कहानी ममता कालिया पृष्ठ क्रमांक 27
७) एक पत्नी के नोट्स उपन्यास ममता कालिया पृष्ठ क्रमांक 64
८) नरक दर नरक उपन्यास ममता कालिया पुस्तक क्रमांक 3
९) बेघर उपन्यास ममता कालिया पृष्ठ क्रमांक 45
१०) सुखम दुखम उपन्यास ममता कालिया पृष्ठ क्रमांक 20
११) इक्कसवीं सदी कहानी ममता कालिया पृष्ठ क्रमांक 40